⑥ बौद्ध शिक्षा (500 B.C - 1200 A.D)

बौद्ध कालीन शिक्षा का उद्देश्य :-

1) वैदिककालीन काल में धर्म के प्रभाव का अत्याधिक हावि होना।
2) यज्ञ, हवन, आध्यात्मिक विकास, जप, तप आदि पर विशेष बल
3) पुरोहितवाद का विषय, शिक्षा पर ब्राह्मणों का एकाधिकार
4) शुद्रों एवं नारी जाति का शिक्षा की उपेक्षा
5) लोकभाषा की उपेक्षा के कारण जनसाधारण का परेशान होना ऐसी परिस्थिति में लगभग 2500 वर्ष पूर्व लगभग गौतमबुद्ध (563 B.C - 483 B.C) ने बौद्ध धर्म की स्थापना की बौद्ध धर्म को व्यापक हिन्दू धर्म का एक विकसित रूप माना जा सकता है प्रचार, प्रसार के लिए बौद्धमठों की स्थापना की गई प्रारम्भ में इन मठों एवं विहारों का एकमात्र उद्देश्य बौद्ध धर्म की शिक्षा प्रदान करना था परन्तु कालान्तर में सभी धर्मों के छात्रों को इन मठों में प्रवेश दिया गया।

निर्वाण प्राप्ति पर आधिक बल निर्वाण अर्थात् सभी लालसाओ की समाप्ति इस धर्म का प्रभाव 500 B.C - 1200 A.D. तक रहा।

बौद्धकालीन शिक्षा के उद्देश्य :-

(1) नैतिक चरित्र का निर्माण :- इस काल में शिक्षा का मुख्य उद्देश्य छात्रों में नैतिक विकास करना था क्योंकि बौद्ध काल में नैतिक आचरण पर जोर दिया जाता था इसलिए शिक्षा की सहायता से छात्रो में सत्य बोलने, धर्माचरण, आदि नैतिक गुणों का विकास किया जाता था।

(2) बौद्ध धर्म का विकास करना :- इस काल में शिक्षा संस्थाओं की स्थापना बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए की गयी थी। इन संस्थाओं में इस कार्य के लिए बौद्ध भिक्षु तैयार किए जाते थे इन मठों में दी जाने वाली शिक्षा का एक प्रमुख उद्देश्य बौद्ध धर्म का प्रचार व प्रसार करना था।

(3) व्यक्तित्व का विकास :- बौद्ध मठों में विद्यार्थी के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करके उन्हें श्रेष्ठ मानव बनाने का प्रयास किया जाता था ताकि वे सांसारिक, सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक, आर्थिक क्षेत्रों के दायित्व का निर्वहन सफलता पूर्वक कर सके।

(4) जीवन के लिए तैयार करना :- बौद्धकालीन शिक्षा व्यवस्था जीवनोपयोगी, ज्ञान प्रदान करके, जीविकोपार्जन के लिए प्रशिक्षित किया जाता था जिससे छात्र गृहस्थ जीवन में प्रवेश कर अपना तथा अपने परिवार का ठीक से भरण पोषण कर सके।

(5) ज्ञान का विकास करना :- महात्मा बुद्ध के अनुसार समस्त दुखो का कारण अज्ञानता है तथा उन्होंने निर्वाण की प्राप्ति में सच्चे ज्ञान के विकास पर बल दिया। वैदिक काल में वेद ग्रन्थों के ज्ञान को सच्चा ज्ञान माना जाता था लेकिन आज सामान्यतः वस्तु जगत के स्पष्ट ज्ञान को सच्चा ज्ञान माना जाता है।

बौद्ध धर्म और दर्शन चार सत्यों को मानते है
(i) संसार दुखमय
(ii) इन दुखो का कारण है
(iii) इन दुखो से छुटकारा पाना ही निर्वाण है
(iv) निर्वाण प्राप्ति हेतु, जप, तप ही नहीं बल्कि मनुष्य मात्र का कल्याण करना भी आवश्यक है।

(6) मानव संस्कृति का संरक्षण एवं विकास :- बौद्ध धर्म मानव जाति विशेष का ही नहीं बल्कि मानव की संस्कृति एवं विकास का पोषक है यही कारण है कि बौद्ध मठों में बौद्ध धर्म एवं दर्शन के साथ-2 अन्य धर्मो एवं दर्शनो एवं संस्कृति के अध्ययन की व्यवस्था थी।

उस काल में अनेको विश्व

निर्वाण प्राप्ति

प्राचीन साहित्य के संरक्षण एवं नवीन साहित्य के निर्माण में लगे हुए थे ये प्राचीन ग्रन्थों को हस्तलिखित लिपियां तैयार करते थे और भिन्न भाषा में उसका अनुवाद करते थे।

(7) कला, कौशलों एवं व्यवसायों की शिक्षा :- बौद्ध धर्म मनुष्यों को संसार से विमुक्त होने का उपदेश नहीं देता वह तो मनुष्यों को संसार के दुखों से बचने का उपदेश देता है इसी उद्देश्य से मूरख से बचने के लिए तथा अपने जीवन स्तर को बेहतर बनाने के लिए विभिन्न प्रकार के कला कौशलों एवं व्यवसायों की शिक्षा आवश्यक है बौद्ध काल में हमारे देश में कृषि, पशुपालन कला कौशल और वाणिज्य के क्षेत्र में काफी प्रगति हो चुकी थी अतः बौद्ध मठों एवं विहारों में इसकी शिक्षा की व्यवस्था की गयी थी।

(8) सामाजिक कल्याण की शिक्षा :- बौद्ध धर्म मानवमात्र के कल्याण का पक्षधर है यही कारण है कि इसमें सबसे अधिक बल करुणा और दया पर दिया गया है बिना करुणा भाव के एक मनुष्य दूसरे मनुष्य के दुखों को नहीं समझ सकता है और बिना दया के एक दूसरे मनुष्य के दुखों को दूर नहीं कर सकता है यदि आप गम्भीरता से सोचे या समझे तो मनुष्य के दुखों का कारण मनुष्य स्वयं है मनुष्य का मनुष्य के प्रति कर्तव्य को सामाजिक आचरण कहते हैं इस प्रकार हम कह सकते हैं कि बौद्ध शिक्षा का एक उद्देश्य सामाजिक कल्याण की शिक्षा ही था।

बौद्ध कालीन शिक्षा की विशेषताएं →

(1) प्रव्रज्जा संस्कार :- प्रव्रज्जा संस्कार :- शिक्षा प्राप्ति करने के लिए बालकों का मठों में प्रवेश हेतु प्रव्रज्जा / पव्रज्जा संस्कार होता था। प्रव्रज्जा का शाब्दिक अर्थ है "बाहर ले जाना" अतः प्रव्रज्जा संस्कार से तात्पर्य है कि "घर" से बाहर जाना। मठ का सबसे बड़ा भिक्षु ही इस संस्कार को सम्पन्न कराता था। "विनय पिटक" में प्रव्रज्जा संस्कार का वर्णन इस प्रकार किया गया है — छात्र अपने सिर के बाल मुंडवाता था पीले कपड़े पहनता था मठ के भिक्षुओं के चरणों में अपना माथा टेकता था और फिर पालथी मारकर बैठ जाता था इसके बाद मठ का सबसे बड़ा भिक्षु उसे तीन वचन "शरणत्रयी" कहलवाता था —

बुद्धम् शरणम् गच्छामि
धम्मम् शरणम् गच्छामि
संघम् शरणम् गच्छामि

प्रव्रज्या के लिए माता-पिता की अनुमति आवश्यक थी। प्रव्रज्या आठ वर्ष के बालको को दी जाती थी तथा इसके बाद बालक सामनेर, नवशिष्य, श्रमण कहलाता था और उसे मठ में ही रहना होता था नव शिष्य को दस उपदेश दिए जाते थे जिसे "दस सिक्खा पदानि" (प्रव्रज्या) के नाम से जाना जाता था ये दस नियम निम्न थे:-

(i) अहिंसा का पालन करना
(ii) शुद्ध आचरण करना
(iii) सत्य बोलना
(iv) सत् आहार करना
(v) मादक पदार्थों से दूर रहना
(vi) निंदा न करना
(vii) श्रृंगार न करना
(viii) नृत्य तमाशों को न देखना
(ix) बिना दिए किसी वस्तु को न लेना
(x) सोना, चाँदी, हीरे, जवाहरात आदि वस्तुओं को दान में न लेना।

बौद्ध मठों के द्वार सभी के लिए खुले रहते थे तथा कोई जातिबंधन नहीं था

चाण्डाल परन्तु अस्वस्थ विकलांग व्यक्तियों को प्रव्रज्या या प्रव्रज्या का अधिकार नहीं था।

छात्रों की दिनचर्या :- बौद्ध काल में छात्रों की दिनचर्या अत्यधिक कठिन थी छात्र भिक्षाटन करते थे तथा कड़े अनुशासन में रहते थे प्रातःकाल गुरु के दन्तधावन, स्नान, इत्यादि नित्य कर्मों की व्यवस्था करने के उपरान्त छात्रगण भोजन की व्यवस्था करते थे गुरु छात्रों को भिक्षा प्राप्ति के लिए प्रेरित करते थे इसके अलावा सामनेर को दस आदेशों का पालन करना पड़ता था संक्षेप में छात्रों की दिनचर्या इस प्रकार थी –

(1) भिक्षाटन :- छात्रों को प्रायः जल्दी उठकर भिक्षाटन हेतु जाना पड़ता था वे मौन होकर भिक्षा मांगते थे बोलकर नहीं।

(2) भोजन :- विद्यार्थियों का भोजन बहुत सादा साधारणतया दिन में 3 बार होता था रात्रि भोजन के लिए गुरु व शिष्य कहीं न कहीं आमंत्रित किए जाते थे।

(3) वस्त्र :- छात्रों को कम से कम वस्त्र पहनने का आदेश था इनके तीन वस्त्र होते है 'तिचिवरा' नाम से जाना जाता था।

(4) स्नान :- छात्रों को स्नान करते समय, खेल करने व अपने शरीर को रगड़ने की मनाही थी।

(5) अनुशासन :- अनुशासन में बहुत बल दिया जाता था छात्र, फल, पत्तों और वृक्षों को हानि नहीं पहुँचा सकते थे सम्पत्ति नहीं रख सकते थे, खेल

तमाशों की नहीं देख सकते थे, शरीर को अलंकृत नहीं कर सकते थे नियमों का पालन न करने पर दण्ड दिया जाता था कभी-2 अनुशासन हीनता के कारण पूरे संघ को दण्ड दिया जाता था और उसके सभी सदस्यों को संघ से निकाल दिया जाता था।

शिक्षण संस्थाएं :- बौद्धकालीन प्रमुख शिक्षण संस्थाएं चार थी :-

(i) तक्षशिला
(ii) विक्रमशिला
(iii) वल्लभी
(iv) नालन्दा

तक्षशिला :-

स्थान → तक्षशिला वर्तमान पाकिस्तान की रावलपिंडी से लगभग 35 km की दूरी पर स्थित है राजा भरत ने अपने पुत्र तक्ष के नाम से इस नगरी को बसाया था

भवन एवं पुस्तकालय → प्रारम्भ में केवल एक विहार का निर्माण हुआ था तथा आगे चलकर अनेक विहारों का निर्माण हुआ जिसमें बड़े-2 कक्ष तथा सभा भवन बने बड़ा पुस्तकालय बना बड़े-2 शिक्षक निवास व छात्रावास बने और भोजनालय बने थे। यह एक उच्च श्रेणी के विश्वविद्यालय के रूप में विकसित हुआ।

प्रवेश प्रक्रिया → इसमें किसी भी जाति के बच्चो को प्रवेश का अधिकार था प्रवेश हेतु 16 वर्ष की आयु निर्धारित प्रवेश परीक्षा होती थी। प्रवेश के लिए 1000 स्वर्ण मुद्रा शुल्क के रूप में देनी पड़ती थी जो मुद्रा शिष्य अपनी सुविधानुसार दे सकते थे और जो असमर्थ थे वे गुरु सेवा करके पढ़ सकते थे।

पाठ्य विषय → इस विश्वविद्यालय में पाठ्य विषय- धार्मिक एवं लौकिक दोनो प्रकार की शिक्षा दी जाती थी धार्मिक शिक्षा के अंतर्गत बौद्ध एवं वैदिक दोनो प्रकार की शिक्षा अनिवार्य थी लौकिक शिक्षा के अंतर्गत भाषा (संस्कृत, पाली) और साहित्य, व्याकरण, दर्शन, ज्योतिष व अर्थशास्त्र की शिक्षा की उत्तम व्यवस्था थी प्रसिद्ध अर्थशास्त्री चाणक्य इसी विश्वविद्यालय के छात्र थे यह केन्द्र लगभग 1000 वर्ष तक शिक्षा की सेवा करता रहा और बाद में हूणों ने आक्रमण के कारण नष्ट हो गया।

परीक्षा एवं उपाधियां :- इस विश्वविद्यालय में शिक्षा पूरी होने पर परीक्षा होती थी भिक्षुओं का

एक Panel होता था जो इनसे मौखिक प्रश्न पूछता था और सफल छात्रों को प्रमाण पत्र दिए जाते थे

विक्रमशिला :-

स्थान → यह विश्वविद्यालय मगध के गंगा तट पर एक पहाड़ी पर स्थित था इसका निर्माण पाल वंश के राजा धर्मपाल ने 8 वीं शताब्दी के दौरान में कराया था

भवन एवं पुस्तकालय → इस विश्वविद्यालय में में बड़े-2 कक्ष सभाभवन, शिक्षक - निवास भवन और छात्रावास थे विश्वविद्यालय के केन्द्र में महाबोधि (भगवान बुद्ध की मूर्ति) स्थापित थी इसके चारों ओर 108 मंदिर थे विश्वविद्यालय के चारों ओर पक्की चार दिवारी थी जिसमें 6 द्वार थे इस विश्वविद्यालय में एक विशाल पुस्तकालय था जिसमें हजारों दुर्लभ पुस्तके थी और सैकड़ो लेखक उनकी प्रतिलिपियां और उनके अनुवाद कार्य में लगे थे

छात्रों का प्रवेश → विश्वविद्यालय में 6 द्वार थे सभी द्वारों पर भिन्न-2 विषय के विद्वान रहते थे जो छात्र जिस विषय पर प्रवेश चाहता था वह उसी द्वार पर उपस्थित होता था द्वार पर प्रवेश परीक्षा होती थी और सफल छात्रों को प्रवेश दिया जाता था

पाठ्य विषय → इस विश्वविद्यालय में धर्म के नाम पर विशेष रूप से बौद्ध धर्म के हीनयान शाखा के ग्रन्थों का अध्ययन कराया जाता था इसके अलावा अर्थशास्त्र, विधि, चिकित्सा, दर्शन, भाषा, तर्कशास्त्र आदि विषयों की व्यवस्था थी।

परीक्षा एवं उपाधियां → परीक्षाएं मौखिक रूप से होती थी तथा उत्तीर्ण छात्रों को स्नातक की उपाधि दी जाती थी।

कुतुबुद्दीन ऐबक ने गद्दी पर बैठते ही 1203 ई. में इसे अपने सेनापति बख्तियार खिलजी से नष्ट करवा दिया। उसने भवन गिरवा दिए। पुस्तकालय जलवा दिया गया तथा पढ़ने-पढ़ाने वालों का भी वध करवा दिया था। इस विश्वविद्यालय की देन धन्वन्तरि तथा चरक थे

वल्लभी विश्वविद्यालय :-

स्थिति → वल्लभी विश्वविद्यालय भारत के पश्चिम में गुजरात प्रान्त के काठियावाड़ के निकट स्थित था। चौथी शताब्दी में ये मैत्रक वंश की राजधानी थी राजधानी के साथ-2 यह उस समय अन्तर्राष्ट्रीय बन्दरगाह था और व्यापार का मुख्य केन्द्र था ऐसा उल्लेख मिलता है कि उस समय इस नगर

में सौ करोड़पति नागरिक रहते थे पुस्तकाल में यह नालन्दा के प्रतिद्वन्दी के रूप में स्थापित हुआ

भवन एवं पुस्तकालय → मैत्रक राजकुमारी दुड्डा ने यहां प्रथम विहार बनाया था इसके बाद यहां धीरे-2 सौ विहारों का निर्माण हो गया जिसमें यह विश्वविद्यालय चलाया था इसमें एक विशाल पुस्तकालय था जिसे राज्य से आर्थिक अनुदान प्राप्त था

छात्रों का प्रवेश → इस विश्वविद्यालय में प्रवेश परीक्षा होती थी और बिना किसी भेदभाव के प्रवेश दिया जाता था

पाठ्यविषय → इसमें धर्म के नाम पर बौद्ध धर्म के हीनयान शाखा के ग्रन्थों का अध्ययन कराया जाता था इसके अलावा अर्थशास्त्र, विधि, और चिकित्सा शास्त्र की उत्तम व्यवस्था थी

परीक्षा एवं उपाधियां → मौखिक रूप से, उत्तीर्ण छात्रों को स्नातक की उपाधि दी जाती थी

नालन्दा विश्वविद्यालय →

स्थिति :- यह विश्वविद्यालय बिहार प्रान्त के पटना नगर से लगभग 95 km दूरी पर स्थित था यह महात्मा बुद्ध के शिष्य सारिपुत्र की जन्मभूमि था बौद्ध धर्मावलम्बी सम्राट अशोक ने इसका निर्माण कराया था 7 वीं शताब्दी में यह अपने उच्च विकास के शिखर में था

भवन एवं पुस्तकालय :- चीनी यात्री - ह्वेनसांग ने अपनी भारत यात्रा वर्णन में लिखा है कि इस विश्वविद्यालय में 300 अध्ययन कक्ष 8 बड़े सभा भवन 13 छात्रभवन और साथ ही अनेक शिक्षक निवास भवन व भोजनालय भवन थे इसके चारों ओर पक्की चाहरदीवारी थी इसके अन्दर जाने हेतु केवल एक फाटक था विश्वविद्यालय के मध्य में 9 मंजिला विशाल पुस्तकालय था जो कि तीन भागों में बंटा था रत्नसार, रत्नोदधि, रत्नरंजक

छात्रों का प्रवेश :- मुख्य द्वार पर भिक्षुओं द्वारा द्वार पर ही परीक्षा ली जाती थी इसमें केवल 10% से केवल 25% छात्र ही सफल होते थे प्रवेश परीक्षा में उत्तीर्ण छात्र को बिना किसी भेदभाव के प्रवेश दिया जाता था

पाठ्यविषय :- इस विश्वविद्यालय में बौद्ध साहित्य एवं दर्शन (हीनयान एवं महायान), चारों वेद, न्याय, सांख्य एवं योगदर्शन व्याकरण, गणित, ज्योतिष, कला, शिल्प और आयुर्वेद

चिकित्सा आदि की व्याख्या थी।

परीक्षाएं एवं उपाधियां :- इस विश्वविद्यालय में शिक्षा पूर्ण होने पर छात्रों की परीक्षा होती थी छात्र भिक्षुओं के एक पैनल के सामने उपस्थित होते थे भिक्षु उनसे मौखिक प्रश्न पूछते थे संतुष्ट होने पर छात्रों को सफल घोषित किया जाता था तथा सफल छात्रों को स्नातक की उपाधि दी जाती थी कुतुबुद्दीन ऐबक के सेनापति बख्तियार खिलजी ने 11वीं शताब्दी के अंत में इसे ध्वस्त करवा दिया था।

बौद्ध पाठ्यक्रम :- बौद्ध विहारों में दो प्रकार के पाठ्यक्रम प्रचलित थे :-

(i) धार्मिक - बौद्ध धर्म, साहित्य, वैदिक धर्म आदि विषय थे

(ii) लौकिक पाठ्यक्रम - यह जनसाधारण के लिए था उन्हें आर्थिक तथा सामाजिक जीवन जीने के लिए तैयार करके सुयोग्य एवं आदर्श नागरिक बनाना था इसमें दर्शन तर्कशास्त्र, न्यायशास्त्र, चिकित्साशास्त्र, राजव्यवस्था, ज्योतिष इत्यादि विषयों का अध्ययन कराया जाता था

शिक्षण विधि :- बौद्ध मठों या विहारों में छात्रों को शिक्षा सामूहिक रूप में दी जाती थी शिक्षण विधि मुख्यतः मौखिक थी

1) प्रवचन भाषण और प्रश्नोत्तर विधि पर विशेष बल दिया जाता था इसके अतिरिक्त देशाटन, तर्क - वितर्क, व्याख्या, शास्त्रार्थ का भी उपयोग किया जाता था

2) उच्च शिक्षा का माध्यम पालि भाषा थी वैदिक साहित्य की शिक्षा के लिए संस्कृत भाषा का उपयोग होता था इसके अतिरिक्त महात्मा बुद्ध के अनुसार दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए देश की अन्य प्रचलित भाषाओं का भी उपयोग किया जाता था।

गुरु - शिष्य सम्बन्ध :- बौद्धकाल में गुरु शिष्य सम्बन्ध, अधिक मधुर थे वे परस्पर प्रेम श्रद्धा, विश्वास और कर्तव्यों पर आधारित थे शिष्य गुरु के दैनिक कार्यों की तैयारी तथा आसन की व्यवस्था करता था गुरु अपने शिष्य के आवास व भोजन की व्यवस्था करता था तथा उसका सर्वांगीण विकास करता था

अनुशासन एवं दण्डव्यवस्था :- बौद्धकालीन शिक्षा में अनुशासन पर अत्यधिक महत्व दिया जाता था मठ या विहार में प्रवेश के ~~उपरान्त~~ उपरान्त भिक्षुओं को 10 आदेशों का पालन करना अनिवार्य होता था उसे मठों के नियमों का

कठोरता से पालन करना होता था अनुशासन भंग करने पर दोषी को मठ से निष्कासित कर दिया जाता था।

नारी अथवा स्त्री शिक्षा :- प्रारम्भ में बौद्ध संघो में स्त्रियों को स्थान नहीं दिया गया बाद में महात्मा बुद्ध ने स्त्रियों को संघ में प्रवेश करने की अनुमति दे दी और उनके लिए अलग से मठों का निर्माण करवाया गया। मठों में प्रवेश करने वाली स्त्रियां, भिक्षुणी कहलाती थी। इनमें गौतमी, शीलभट्टारिका, प्रमुखदेवी, सुमेधा, विजयंका और संघमित्रा आदि स्त्री के नाम उल्लेखनीय है।

वित्त व्यवस्था :- बौद्धकाल में शिक्षण संस्थानों में अलग-2 वित्त व्यवस्था थी कुछ संस्थानो में छात्रों से प्रवेश के समय या शिक्षा समाप्ति के उपरान्त स्वर्णमुद्राएं ली जाती थी तथा कुछ संस्थानों में निशुल्क व्यवस्था थी और ऐसे संस्थानो में आय के स्त्रोत सम्पूर्ण गांववासी राजा प्रजा के द्वारा दिए गए दान से होता था।

उपसम्पदा संस्कार :- बौद्ध मठ में 12 वर्ष की शिक्षा समाप्त करने पर उपसम्पदा संस्कार होता था यह बौद्ध धर्म का दूसरा तथा अंतिम संस्कार था। वैदिकालीन शिक्षा पद्धति में समावर्तन उपदेश के उपरान्त ब्रह्मचारी गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करता था परन्तु बौद्धकालीन शिक्षा पद्धति में उपसम्पदा संस्कार के उपरान्त सामनेर पक्का भिक्षु बन जाता था तथा उसका गृहस्थ जीवन से कोई संबंध नहीं रह जाता था। प्रव्रज्या तो अल्पकाल के लिए होती थी परन्तु उपसम्पदा सम्पूर्ण जीवन के लिए भिक्षुक बने रहने का संकल्प होता था। इस प्रकार बौद्ध शिक्षा में 12 वर्ष की शिक्षा के बाद छात्रों के लिए दो रास्ते या दो विकल्प होते थे —

1) गृहस्थ जीवन में प्रवेश करना
2) आजीवन भिक्षुक रहकर बौद्ध धर्म का प्रसार या प्रचार करना

दूसरे रास्ते को अपनाने वाले छात्रों का ही उपसम्पदा संस्कार होता था। उपसम्पदा संस्कार मठों में भिक्षुओं के समक्ष एक उत्सव के रूप में होता था। सामनेर भिक्षुओं का वेष धारण करके हाथ में कमण्डल तथा कंधे पर चीवर लेकर अन्य भिक्षुओं को प्रणाम करके बैठ जाता था। सभी भिक्षुक जनतांत्रिक ढंग से बहुमत के आधार पर निर्णय लेते थे कि वह उपसम्पदा का अधिकारी है अथवा नहीं। उपसम्पदा प्राप्त भिक्षुक बौद्ध मठ का स्थायी सदस्य बन जाता था और उसे 8 नियमों का पालन करना होता था।

पहनावा/वस्त्र चादर

1) साधारण वस्त्र पहनना
2) वृक्षों के नीचे वास करना
3) भिक्षा मांगकर सात्विक भोजन करना

4) चोरी न करना
5) जीव हत्या न करना
6) अलौकिक शक्तियों का दावा न करना
7) स्त्री से यौन संबंध स्थापित न करना
8) औषधी के रूप में गौमूत्र का सेवन करना

बौद्धकालीन शिक्षा के गुण –

1) सभी धर्मों के छात्रों को प्रवेश
2) लोकभाषाओं में शिक्षण देना
3) धार्मिक और लौकिक दोनो प्रकार की शिक्षा दी जाती थी
4) शिक्षण किसी भी धर्म के विद्वान दे सकते थे
5) शिक्षण समाप्ति के बाद उपाधियाँ
6) विश्वव्यापि विश्वविद्यालय का निर्माण
निःशुल्क का निर्धारण विद्यार्थियों आर्थिक स्थिति के अनुसार पुस्तकालय की व्यवस्था
7) सादा जीवन उच्च विचार के सिद्धान्त का वास्तविक पालन उत्कृष्ट उच्च शिक्षण की व्यवस्था
8) गुरु व शिष्य के सम्बन्ध आदर्श व मधुर
9) व्यवसायिक शिक्षण की उत्तम व्यवस्था
10) प्राथमिक शिक्षण निःशुल्क उच्च शिक्षा सशुल्क

बौद्धकालीन शिक्षा के दोष :-

i) हस्त कार्य के प्रति घृणा
ii) आय के अनिश्चित स्त्रोत व भिक्षाटन
iii) कठोर अनुशासन
iv) सैनिक शिक्षा का अभाव
v) स्त्री शिक्षा की उपेक्षा
vi) लौकिक जीवन की उपेक्षा
v) कट्टर धार्मिक विचारों का समावेश

देश की दुर्बलता

समानताएं :-

1) दोनो शिक्षा प्रणालियों में शिक्षा का सर्वोच्च लक्ष्य मोक्ष प्राप्त करना था

2) दोनो शिक्षा प्रणालियों में शिक्षा पूर्णतया स्वतंत्र स्वायत्त तथा शासन के नियंत्रण से मुक्त थी

3) दोनो शिक्षा प्रणालियों में शिक्षा के उद्देश्यों में समानता थी तथा छात्रों के चरित्र निर्माण पर विशेष बल दिया जाता था

4) दोनो शिक्षा प्रणालियों में शिक्षण संस्थाओं की आय के मुख्य स्त्रोत दान और भिक्षा थे

5) दोनो शिक्षा प्रणालियों में पाठ्यक्रम लगभग एक जैसा था

6) दोनो शिक्षा प्रणालियों में शिक्षण विधि एक जैसी थी

7) दोनो शिक्षा प्रणालियों में गुरु-शिष्य सम्बन्ध मधुर, पवित्र तथा आत्मीय थे

8) दोनो शिक्षा प्रणालीयों में भिक्षावृत्ति तथा दान द्वारा प्राप्त भोजन, अन्न, वस्त्र आदि का उपयोग किया जाता था

9) दोनो शिक्षा प्रणालियों में शिक्षण संस्थाएं आवासीय थी

10) दोनो शिक्षण प्रणालियों में प्रवेश के समय क्रमशः उपनयन व प्रव्रज्या संस्कार होता था

11) दोनो शिक्षा प्रणालियों में कला कौशल एवं व्यवसाय की शिक्षा को समुचित व्यवस्था थी

12) दोनो ही प्रणालियों में ब्रह्मचर्य को महत्वपूर्ण माना गया है

13) दोनो ही शिक्षा प्रणालियों में कठोर अनुशासन का पालन करना होता था

14) दोनो शिक्षण प्रणालियों छात्रों के सर्वांगीण विकास पर ध्यान दिया जाता था

असमानताएं :-

वैदिक शिक्षा	बौद्ध शिक्षा
i) वैदिक शिक्षा प्रणाली में शिक्षा पर गुरुओं का नियंत्रण था	i) बौद्ध शिक्षा प्रणाली में शिक्षा पर बौद्ध संघो का नियंत्रण था
ii) इस शिक्षा पद्धति में वर्णाश्रम व्यवस्था को महत्व दिया जाता था	ii) वर्णाश्रम व्यवस्था को कोई महत्व नहीं दिया जाता था
iii) ईश्वर की सत्ता पर विश्वास करते थे	iii) नास्तिक/अनिश्वरवादी

iv) शिक्षा व्यक्तिगत रूप से दी जाती थी	iv) सामूहिक शिक्षा पर अधिक बल दिया जाता था
माध्यम – संस्कृत	लोकभाषा, पालि
शिक्षक का ब्राह्मण होना आवश्यक था	किसी भी वर्ग के व्यक्ति शिक्षण कार्य करे
v) पुस्तकालय नहीं था	v) पुस्तकालय थे
vi) केवल शिष्य भिक्षाम: देहि कहकर भिक्षाटन करते थे	vi) गुरु – शिष्य मौन रहकर भिक्षाटन करते थे
vii) इस शिक्षा प्रणाली में धर्म को अधिक महत्व दिया जाता था	vii) इस शिक्षा प्रणाली में शिक्षा जीवन के अधिक निकट थी
viii) निशुल्क शिक्षा	viii) शिक्षण शुल्क लिया जाता था
ix) प्रवेश परीक्षा नहीं थी	ix) परीक्षा थी
x) गुरुकुलों में शिक्षा दी जाती थी	x) बौद्ध मठों व विहारों में शिक्षा दी जाती थी
xi) इस शिक्षा प्रणाली में शिक्षा का प्रभाव केवल भारत तक ही सीमित था	xi) इस शिक्षा प्रणाली में शिक्षा का प्रचार-प्रसार अनेक पड़ोसी देशों में जैसे – चीन, तिब्बत, जापान, बर्मा आदि में हुआ
xii) शूद्रों को शिक्षा से वंचित रखा गया	xii) शूद्रों को भी शिक्षा दी जाती थी
xiii) इस शिक्षा प्रणाली में उपनयन संस्कार होता था	xiii) यहां पर प्रव्रज्या संस्कार होता था
xiv) इस शिक्षा प्रणाली में स्त्री सन्यासिनी सिर के बाल नहीं मुड़वाती थी	xiv) इस शिक्षा प्रणाली में आजीवन अविवाहित होने का शपथ लेना होता था तथा वो सिर के बाल मुड़वाती थी
xv) यह शिक्षा प्रणाली गुरु को सर्वोच्च स्थान प्रदान करती थी तथा शिष्य गुरु की आज्ञा को ब्रह्मवाक्य मानता था	xv) इस शिक्षा प्रणाली में भी गुरु को सर्वोच्च स्थान प्रदान किया जाता था किन्तु शिष्य गुरु के आचरण पर संघ में शंका उठा सकता था अतः समय संघ सर्वोच्च हो जाता था
xvi) उच्च शिक्षा के लिए कोई संस्कार नहीं होता था	xvi) बौद्ध संघ में उपसम्पदा संस्कार किया जाता था
xvii) इस शिक्षा प्रणाली में कोई उपाधि नहीं दि जाती थी	xvii) स्नातक की उपाधि दी जाती थी
xviii) इस शिक्षा प्रणाली में छात्र समस्त प्रकार की सुख सुविधाओं को त्यागकर शिक्षा ग्रहण करते थे	xviii) इस शिक्षा प्रणाली में बौद्ध मठों में शिष्यों को समस्त सुख सुविधाएं प्राप्त थी जिन्हें प्राप्त करते हुए शिक्षा ग्रहण करते थे
xix) इस शिक्षा प्रणाली में शिक्षा समाप्ति के बाद समावर्तन संस्कार होता था	xix) यहां पर कोई संस्कार नहीं होता था

आधुनिक भारतीय शिक्षा को बौद्ध मुख की देन।

1) मातृभाषा को शिक्षा का माध्यम बनाना
2) शिक्षा का विभिन्न स्तरों पर विभाजन
3) उच्च शिक्षा में प्रवेश परीक्षा
4) सह-शिक्षा
5) सामूहिक शिक्षण की व्यवस्था
6) गुरु-शिष्य मधुर सम्बन्ध
7) शिक्षा के पाठ्यक्रम
8) शिक्षा का अंतर्राष्ट्रीयकरण
9) धार्मिक व नैतिक शिक्षा
10) अनुशासन
11) उपाधियां